प्रथम अध्याय

महाराज डॉक्टर रघुबीर सिंह व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय

महाराज डॉक्टर रघुवीर सिंह व्यक्तित्व एवं कृतित्व ---

महाराज डॉ.रघुवीर सिंह हिन्दी निबन्ध तथा गद्य-काव्य के श्रेष्ठ साहित्यकारों में से एक हैं, जिन्होंने अपनी कल्पनाओं का सहारा लेकर चिंतन से ओतप्रोत साहित्य का निर्माण किया। उनके नाम में `महाराज` का संबंध राज घराने में जन्म होने के नाते और डी.लिट्.प्राप्त करने के बाद `डॉक्टरेट की उपाधि आयी है।

रघुवीर सिंह एक ऐसा व्यक्तित्व है, जिन्होंने अपना नाता साहित्य से जोडा। राज घराने में जन्म लेनेवाला व्यक्ति आमतौर पर साहित्य में रुचि नहीं दिखाता, फिर भी उन्होंने साहित्य में रुचि ही नहीं ली बल्कि योगदान दिया। गद्य-काव्य तथा भावात्मक निबंध लिखनेवालों में वे शीर्षस्थ रहे। आप ऐतिहासिक गद्य-काव्यों के लेखक हैं। आपकी `शेष स्मृतियाँ` इस दृष्टि से सर्वाधिक उत्कृष्ट रचना है। आपने डी.लिट्.उपाधि प्राप्त करने के बाद शासक के रूप में राज्य का पूरा कार्यभार सँभाला। फौज में युध्द का अनुभव मिला और इसी से ऐतिहासिक अध्ययन की ओर आपकी रुचि रही। सन १९२७ में आपका साहित्य में ऐतिहासिक निबंधकार के रूप में पदार्पण हुआ। आपने अंग्रेजी में बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं। साहित्य के अतिरिक्त चित्रकारिता से भी आपका संबंध रहा।

रघुवीर सिंह बडे ही निरभिमानी और सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। उनमें एक सच्चे साहित्यकार की प्रतिभा और लगन थी। आपने साहित्य में नयी शैली अपनाकर हिन्दी साहित्य को नया मार्ग दिखाया। हिन्दी साहित्य में जो योगदान दिया वह बडा ही प्रशंसनीय है।

महाराज डॉक्टर रघुवीर सिंह का व्यक्तित्व --

जन्म तथा बाल्यावस्था --

महाराज कुमार डॉक्टर रघुवीर सिंह का जन्म २३ फरवरी सन १९०८ ई. को सीतामऊ (मालवा) के एक प्रसिद्ध राजकीय परिवार में हुआ। स्वाभाविक ही है कि उनका बचपन राजनीति के परिवेश में गुजरा। इसी कारण बाल्यावस्था में ही उनके मन पर राजकीय आचार-विचारों का गहरा असर हुआ। आपका जन्म राजघराने में होने के कारण बचपन सुख समृद्धि में बीता।

पिता --

महाराज डॉक्टर रघुवीर सिंह के पिता सीतामऊ (मालवा) प्रांत के महाराज थे। उनका नाम श्री रामसिंहजी था। उनके बडे पुत्र डॉक्टर रघुवीर सिंह हैं।

शिक्षा - दिक्षा --

महाराज डॉक्टर रघुवीर सिंह की शिक्षा का प्रारंभ घर ही हुआ। आपने सन १९२४ में बडोदा से बम्बई युनिवर्सिटी की मैट्रिक परीक्षा पास की। इण्टर-मीजियेट भी सन १९२६ में और बी.ए.सन १९२८ में प्राइवेट ही पास की। आपने इन्दौर होलकर कालिज से एल.एल.बी.पास किया। सन १९३६ में आगरा युनिवर्सिटी से `मालवा में युगान्तर` नामक अनुसन्धानपूर्ण ग्रंथ पर डी.लिट. उपाधि आपको प्रदान की गयी। आगरा युनिवर्सिटी से डी.लिट. उपाधि प्राप्त करनेवालों में आप पहले हैं।

नौकरी --

महाराज डॉक्टर रघुवीर सिंह सन १९३२ से १९४९ तक हाईकोर्ट के प्रबन्धक रहे । एक शासक के दृष्टि से आपने सभी क्षेत्र में कार्य किया और राज्य का उत्तरदायित्व निभाया । सन १९४०-४१ से सन १९४५ तक फौज में रहे ।

साहित्यिक रचनाएँ --

महाराज कुमार डॉ.रघुवीर सिंह ने गद्य की रचना की है और निबंधों का संकलन भी किया है । आपके गद्य-काव्यों में 'शेष स्मृतियाँ' सबसे महत्वपूर्ण रचना है । 'शेष स्मृतियाँ', 'सप्तदीप', 'जीवन कण', 'जीवन धूलि', आदि रचनाओं में श्रेष्ठ निबंध संकलित है । 'जीवन-धूलि' में तो बहुत सुन्दर गद्य-गीत है । 'पूर्व मध्यकालीन भारत', 'मालवा में युगान्तर', 'रतलाम का प्रथम राज्य', 'पूर्व आधुनिक राजस्थान' आदि आपके महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थ है । आपने अंग्रेजी में भी कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखे हैं ।

महाराज कुमार डॉक्टर रघुवीर सिंह की साहित्यिक कृतियाँ --

कलाकार के व्यक्तित्व की पहचान उसके साहित्य से होती है। क्यों कि कलाकार अपनी भावनाओं को अपने रचनाओं में चित्रित करता है । चाहे वह कहानीकार हो,गद्य-गीत लेखक हो या निबंधकार हो । उसकी सही पहचान उसकी रचनाओं में ही मिलती है । कलाकार के पास पहले से ही मौजूद प्रतिभा होती है जैसे फूल में सुगंध। लेखक अपने अनुभव से कल्पनाओं का सहारा देकर सजीव रूप में पाठकों के सामने भावनाओं को प्रकट करता है । कलाकार अपनी कला के माध्यम से पाठकों का मनोरंजन करने में, सही मार्ग दिखलाने में, तथा

नयी दिशा की ओर प्रवृत्त करने में सफल हो जाता है । सच्चा साहित्यकार वही होता है जो अपने अनुभव को मौलिक रूप में प्रकट करता है ।

महाराज डॉक्टर रघुवीर सिंह राजघराने से सम्बन्धित होते हुए भी उन्हें विद्या के प्रति प्रेम और सच्ची लगन थी । आप पहले एक निबंधकार के रूप में और फिर गद्य-गीत लेखक के रूप में प्रख्यात रहे । आपको देशी रजवाडों का जितना ज्ञान है, उतना कम व्यक्तियों को होगा । आपने ऐतिहासिक रचनाओं का अध्ययन करके उसमें जो ऐतिहासिकता पायी है उसको एक भावात्मक निबंध के माध्यम से प्रकट किया है । इतिहास में ही रुचि होने के कारण आपने भारतीय इतिहास का विशेष अध्ययन किया । इतिहास में होनेवाले उत्थान-पतन, सुख-दु:ख, ऐश्वर्य-विलास आदि का भव्य चित्र पाठकों के सामने रखा । आपका यह साहित्य हिन्दी को विश्व-साहित्य के समकक्ष ले जाता है ।

निबन्धकार - महाराज कुमार डॉक्टर रघुवीर सिंह --

महाराज कुमार डॉक्टर रघुवीर सिंह जी ने प्रारंभ में भारतीय वैधानिक विकास और देशी रजवाडों की समस्याओं पर आधारित `भारतीय रजवाडे और नया शासन` नामक प्रामाणिक पुस्तक लिखी । उन्होंने साहित्यकार के रूप में सन १९२७ से हिन्दी पत्रपत्रिकाओं में साहित्यिक और ऐतिहासिक निबन्ध लिखना आरम्भ कर दिया था । हिन्दी कि साहित्यिक कृतियों में `सप्तदीप`, `जीवन कण` विभिन्न विषयोंपर लिखे निबन्धों के संग्रह हैं । उनके `शेष स्मृतियाँ` में संकलित पाँच भावात्मक निबंध हैं- `ताज`, `एक स्वप्न की शेष स्मृतियाँ`, `अवशेष`, `तीन कब्रे` `उजडा स्वर्ग` आदि । `जीवन धुलि` में संग्रहित `यौवन के द्वार पर` निबंध में भावुकता का दर्शन होता है ।

डॉ.रघुवीर सिंह ने हिन्दी निबंध साहित्य को एक नयी शैली देकर रचना विधान में परिवर्तन लाया । हिन्दी में भावात्मक कोटि के निबंधों का

विकास करनेवालों में उनका प्रमुख स्थान है । `इतिहास की ममता प्राय: भावुकता में डूब, रागात्मकता में रंग बड़े सुन्दर भावात्मक निबन्धों को जन्म देती है ।[1] डॉ. रघुवीर सिंह ने इतिहास के पृष्ठों को भाव भरे रंगीन चित्रों में चित्रित किया । मुगलकालीन इतिहास की घटनाओं, इमारतें आदि पर बहुत सुन्दर निबन्ध लिखे हैं । वर्णन या विवरण प्रधान विधाओं को भी भाव-प्रधान रूप दिया है । ईंट-पत्थरों में भी कोमल धड़कन सुनी है । उन पर भावोच्छवासों की वर्षा वह बरसा देते हैं । आपके निबंधों में विद्वत्ता और कला-कुशलता का अपूर्व संगम हुआ है । `शेष स्मृतियाँ` इस दृष्टि से सर्वाधिक उत्कृष्ठ रचना है । उनके निबंध का आधार ऐतिहासिक रहा है । भारतीय ऐतिहासिकता का जो विषय छिपा हुआ है उसे भावात्मक निबंधों द्वारा प्रस्तुत किया है । ऐतिहासिक घटनायें और इमारतें आदि को एक संवेदनाओं के रूप में हृदयग्राही बना दिया है ।

`शेष स्मृतियों` से संग्रहित `ताज` भावात्मक निबंध है । `ताज` को देखकर एक संवेदनशील कलाकार के मानस में जिन भावनाओं और अतीत स्मृतियों की तरंगे उठती हैं, उन्हें कलात्मक वाणी देकर लेखक ने अधिक मर्म स्पर्शी बना दिया है ।

`ताज`[2] नामक निबंध रघुवीर सिंह की निबंध कला का श्रेष्ठतम रूप प्रस्तुत करता है । शाहजहाँ और मुमताज महल के प्रेम-सौन्दर्य का यह `स्मृति - सौध, जो दुनिया के सात भारी आश्चर्यों में गिना जाता है, आज भी कितनी मानवीय संवेदनाओं को जगाता है, दिल में हलचल मचा देता है । यह लेखक ने अपनी संवेदनपूर्ण शैली से सफलतापूर्वक दर्शाया है ।

सन १९३० में प्रकाशित `यौवन के द्वार पर`[3] निबंध में उनकी भावुकता के दर्शन होते हैं । इस निबंध में लेखक अपने जीवन के द्वार पर खड़े रहकर विगत् जीवन की मधुर स्मृतियों को याद करता है ।

`उजड़ा स्वर्ग`[4] में अंग्रेजों की दासता में फंसा दिल्ली में भारतीय स्वातंत्र्य के प्रतीक मुगल साम्राज्य के विराम को स्मृति मन्द होते जाना और १८५७ की[5]

क्रान्ति में दासता से उद्धार के लिए अन्तिम मुगल सम्राट बहादूर शाह का प्रतीक के रूप में बुझते हुए दीपक की तरह अन्तिम बार जोर से प्रज्वलित होकर बुझ जाने का बड़ा ही हृदयस्पर्शी वर्णन हुआ है ।

‘शेष स्मृतियाँ’ में संग्रहित पाँच भावात्मक निबंध हैं । जिनके लक्ष्य ‘ताजमहल’, ‘फतहपुर सीकरी’, ‘आगरा का किला’, ‘लाहौर की तीन कब्रें’, और ‘दिल्ली का लाल किला’ आदि हैं । इन निबंधों में अकबर के समय से लेकर बहादूर शाह ‘जफर’ के समय तक के मुगलकालीन इतिहास का भाव-पक्ष चित्रित किया है । उन्होंने ऐतिहासिक घटनाओं को कल्पना का आधार देकर मानवीय सुख-दुःख, प्रणय, उत्थान और पतन इन सभी चढाव - उतार का मर्मस्पर्शी वर्णन किया है ।

डॉ. रघुवीर सिंह एक विशिष्ट भावात्मक शैली द्वारा ऐतिहासिक घटनाओं को चित्रित करने में सफल रहे हैं । उनका व्यक्तित्व भावात्मक निबंधों में दिखाई देता है । उन्होंने साहित्यिक रचनाओं में भावानुभूति प्रकट की है । उनके कृतित्व में कल्पना और ऐतिहासिकता का समन्वय मिलता है । निबंधों में भावनाओं को प्रकट करने में सफलता पायी है । उनके गद्यगीत संग्रहों में भी उनकी भावात्मकता दिखायी देती है ।

<u>गद्य-गीत लेखक - डॉ. रघुवीर सिंह ---</u>

डॉ. रघुवीर सिंह के सृजनात्मक प्रतिभा का दुसरा क्षेत्र है गद्य-गीत । उनके प्रकाशित गद्य-गीतों के तीन संग्रह हैं -- ‘सप्तदीप’, ‘जीवन कण’, ‘जीवन धुलि’ आदि । आप इतिहास के विद्वान और अनुसन्धान कर्ता हैं । आपने गद्य-काव्यात्मक कृतियों में भी इतिहास को ही आधार बनाया है । ‘ऐतिहासिक गद्य-काव्य लिखनेवालों में यह हिन्दी के एक मात्र लेखक हैं ।’ इन्होंने विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं के कल्पना के सहारे विलास और ऐश्वर्यपूर्ण चित्र खींचे हैं । इनके गद्य-काव्यों में दार्शनिक विचार भी स्वाभाविक रूप में आये हैं । जैसे

इनकी `जीवन धूलि` में जीवन की विविध गतिविधियों के चित्र देखने को मिलते हैं और इसमें कवि की भावात्मकता गौण तथा इतिहासज्ञ की विचारात्मकता प्रबल हो गयी है जैसे -- `जीवन एक बुलबुला है, भ्रमण करती हुई आत्मा के ठहरने के लिए धर्मशाला है और संयोग-वियोग प्रवाह में बहते काष्ठ-खण्डों का मिलना और अलग होना है।`[15] गद्य-गीत `कला का आप में सुन्दर रूप मिलता है।` `जीवन धूलि` में आपके बहुत सुन्दर गद्य-गीत संग्रहित हैं।

गद्य-काव्य के संबंध में महाराज कुमार डॉ. रघुवीर सिंह जो ऐतिहासिक गद्य-काव्य के एक मात्र लेखक हैं - कहते हैं -- `गद्य काव्य हिन्दी की स्वतंत्र धारा है या बंगला से प्रभावित ? अधिक ऐतिहासिक खोज एवं अध्ययन के बाद ही इस प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर दिया जा सकता है। परन्तु उसी तौर पर जो कुछ भी ज्ञात है उससे यही मानना पड़ता है कि हिन्दी में गद्य-काव्य का प्रारम्भ प्रधानतया बंगला से प्रभावित होकर ही हुआ। यह सत्य है कि एक बार प्रारम्भ होकर हिन्दी में गद्य-काव्य ने अपना सर्वथा स्वतंत्र रूप धारण किया जैसे चतुरसेन शास्त्री का गद्य-काव्य। फिर भी इस बात से इन्कार करना कठिन है कि इस शैली या प्रवृत्ति विशेष का हिन्दी प्रारंभ बंगला विशेषतया: रवीन्द्रनाथ ठाकुर की `गीतांजलि` की प्रेरणा से ही हुआ था।`[16]

डॉ. रघुवीर सिंह गद्य काव्य के प्रारंभ के बारे में लिखते हैं `रायकृष्णदास जी ने `साधना` की रचना करके जो नवीन प्रणाली प्रारम्भ की वही `अन्तस्तल` और `आनन्दोद` में विकसित हुई।`[17]

डॉ. रघुवीर सिंह के छोटे और लम्बे गद्य-काव्यों में विक्षेप शैली दिखायी देती है। `जीवन धूलि` में एक पुष्प के माध्यम से व्याहत निराश प्रेमी की भावना चित्रित की है। आप एक ऐसे गद्यकार हैं जिन्होंने पाश्चात्य प्रभाव ग्रहण करते हुए भी साहित्य में भारतीय की दृष्टि तथा अतीत के गौरव को जगा दिया। इनके गद्य साहित्य में विचारधारा, भावनाएँ, कल्पनाएँ विषय तथा शैली इत्यादि सभी भारतीय हैं। कुछ स्थानों पर ऐतिहासिक गद्य-काव्यों में

पलायन की वृत्ति दिखायी देती है । उसका कारण हो सकता है कि प्रभुत्व की मिटती हुई कामना लेखक को मानसिक तृप्ति के लिए उकसाती हो ।

निष्कर्ष ----

महाराज रघुवीर सिंह का व्यक्तित्व उनके कृतित्व में दिखायी देता है । उनके साहित्य में मानवीय जीवन के प्रति देखने का दृष्टिकोण है मानवीय जीवन का उतार-चढाव, सुख दुःख, वेदना, पीडा, आकांक्षायें, संघर्ष, संसार से उपेक्षित मनुष्य की स्थिति आदि का चित्र चित्रित किया है । उनके निबंधों में जिस तरह भावुकता है - इसी प्रकार सुक्तियाँ और दार्शनिक विचार गंभीरता लाते हैं । रघुवीर सिंह का व्यक्तित्व भावुकता से भरा हुआ दिखायी देता है । उनके निबंधों का आधार ऐतिहासिक घटनायें और इमारतें हैं फिर भी लेखक भावुकता-वश उससे सम्बन्धित जो मनुष्य हैं - सम्राट और सम्राज्ञी उनका प्रेम, सौन्दर्य, शृंगार और विलासी जीवन, मिलन, संयोग और अंत में बिछड जाने का वियोग का वर्णन बहुत ही रमणीय तथा हृदय ग्राही किया है ।

रघुवीर सिंह ने निबंध और गद्य गीत लिखे हैं, जिनमें भावुकता का ही दर्शन हमें मिलता है । इसी कारण उनके भावात्मक निबंध सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं । वे एक सच्चे, सहृदय और भावुक निबंधकार और गद्य-गीत लेखक के रूप में प्रसिद्ध हैं और वे भावात्मक निबंधकार के रूप में शीर्षस्थान पर रहे हैं । उनका अन्तिम गद्य-काव्य 'शेष स्मृतियाँ' में लिखित पाँच निबंध हैं वे अधिक महत्वपूर्ण कृतियाँ रही हैं ।

संदर्भ

	लेखक	पुस्तक	पृष्ठ संख्या
१	जथनाथ नलिन -	हिन्दी निबंधकार	१८९
२	डॉ.रघुवीर सिंह -	शेष स्मृतियाँ	६१
३	- वही -	जीवन धुलि	३
४	- वही -	शेष स्मृतियाँ	१३३-१५५
५	- वही -	- वही -	६४
६	पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'	'हिन्दी गद्य काव्य' रघुवीर सिंह का पत्र २६ दिसम्बर,१९५१	२७९
७	- वही -	--,,-- 'बिखरे फूल' के वक्तव्य	पृ.५०